हिंदी और क्रोएशियन : भाषा, साहित्य एवं संस्कृति में साम्यता

–श्री रवींद्रनाथ मिश्र

जन्म : 12 जुलाई, 1957, पितंबरपुर, महुलिया, अंबेडकर नगर (उ.प्र.)

शिक्षा :
- ❖ पी.एच.डी. – बी.एड (मुंबई विश्वविद्यालय)
- ❖ एम.ए. (कर्नाटक विश्वविद्यालय)
- ❖ बी.ए. (इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

व्यवसाय :
- ❖ अध्यापन एवं प्रशासकीय कार्य, 1979 से गोवा में
- ❖ प्रवक्ता, प्रपाठक, आचार्य, अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य संकाय, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, 1990
- ❖ अतिथि आचार्य–हिंदी, ज़ाग्रेब विश्वविद्यालय, क्रोएशिया, यूरोप (अप्रैल 2016 से जुलाई 2017)

प्रकाशन :
- ❖ 'डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन', 'समीक्षाएँ : विविध आयाम'
- ❖ 'काव्यास्वाद के नव्य निकष',
- ❖ 'साहित्य : विविध परिदृश्य'
- ❖ 'अंतिम दशक की हिंदी कविता'।
- ❖ देश की विभिन्न हिंदी पत्र–पत्रिकाओं एवं संपादित पुस्तकों में 80 आलेख तथा कोंकणी कविताओं, कहानियों एवं निबंधों का हिंदी में अनुवाद 'समकालीन भारतीय साहित्य' एवं 'भाषा' पत्रिका, नई दिल्ली में प्रकाशित।

सम्मान :
- ❖ हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'विद्यावाचस्पति' की मानद् उपाधि।

किसी भी देश की भाषा, साहित्य और संस्कृति के बीच परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है। वैश्विक धरातल पर विभिन्न देशों की भाषा, साहित्य और संस्कृति में स्वरूपगत भेद हो सकता है, लेकिन मानवीय मूल्य, संवेदना, जीवन और जगत की धड़कन सबमें विद्यमान होती है। इस दृष्टि से हिंदी और क्रोएशियन भाषा, साहित्य और संस्कृति में साम्यता दृष्टिगोचर होती है। कला को किसी विशेष भू–भाग तक सीमित नहीं किया जा सकता। साहित्य का निर्माण भाषा से होता है। भाषा और साहित्य दोनों मिलकर संस्कृति का उन्नयन और संवर्धन करते हैं। जहाँ भाषा विचारों और भावों के आदान–प्रदान का सशक्त माध्यम है, वहीं साहित्य जीवन और जगत की संवेदनात्मक अनुभूतियों की कलात्मक अभिव्यक्ति है तथा संस्कृति मानव जीवन के अंतरंग एवं बाह्य पक्षों की उद्घाटक है। परिवर्तन की प्रक्रिया में इनमें बदलाव होना स्वाभाविक है। यदि ऐसा न हो, तो उनमें जड़ता आ जाएगी। जड़ता मृत्यु का सूचक है। परिवर्तन से ही जीवंतता बनी रहती है। प्रेमचंद ने लिखा है "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो–जो हम में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज़्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"[1]

प्राचीन काल में परिवर्तन की प्रक्रिया शनैः शनैः थी। आज भूमंडलीकरण के दौर में सब कुछ त्वरित गति से बदल रहा है। जहाँ भाषा को वैज्ञानिक रूप देकर उसमें सुधार किया जा रहा है, वहीं साहित्य की विषयवस्तु एवं रूप में भी बदलाव की प्रक्रिया जारी है। साहित्य में बौद्धिक पक्ष प्रबल हो रहा है। संस्कृति के धरातल पर पूर्व और पश्चिम की बर्लिन दीवार ढह रही है। मैं संक्षिप्त रूप से भाषाई स्तर पर संस्कृत, हिंदी और

क्रोएशियन की चर्चा करूँगा। हिंदी और ह्ववाती भारोपीय भाषा परिवार की भाषाएँ हैं। इस परिवार की प्राचीन भाषाएँ, संस्कृत, लैटिन और ग्रीक हैं। संस्कृत हिंदी की जननी है, तो ग्रीक और लैटिन ह्ववाती की। दसवीं शताब्दी के आसपास पश्चिमी और पूर्वी यूरोप में क्रमशः लातीनी और यूनानी भाषा का प्रभाव था। ह्ववाती काव्य का प्रारंभ गलगोलित्सा लिपि के द्वारा जनबोली साहित्य के रूप में हुआ। कालान्तर में ह्ववाती काव्य का उदय इसी लिपि में हुआ, लेकिन नगरों में लातीनी के प्रभाव के कारण इसका विकास नहीं हो सका। पुरातत्व की खोज के अनुसार प्राचीन क्रोएशियन साहित्य की रचना लातीनी लिपि में की गई। अतएव क्रोएशियन भाषा की जननी लैटिन है। जोकि स्प्लिट के पेतारतस्रीनी (काला पीटर) की समाधि पर अंकित है।

"इस गंदे गर्त में जान सकोगे मनुष्य क्या है ?
उन्माद के बीच न जाना
मैंने दूसरों का भला क्या है ?
जब तक जीया, विश्व में भय बना था मैं।
इससे अधिक स्वयं के लिए कुछ नहीं कह सकता मैं।"[2]

भारत और क्रोएशिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करें तो दोनों देशों का इतिहास संघर्षों का रहा है। ह्ववाती और हिंदी भाषा का आर्विभाव इन्हीं संघर्षों के बीच हुआ। हिंदी का विकास अपभ्रंश के बाद ब्रज और अवधी भाषा (आज की बोली) से एवं ह्ववाती का चाकावी बोली से हुआ। उस समय दोनों भाषाओं का साहित्य मौखिक बोली की लोक परंपरा में था। जिसे कालान्तर में लिपिबद्ध किया गया। क्रोएशियन लोकगीत "चिड़िया गौरैया" में गौरैया को रोते हुए देखकर पर्वतबाला ने कहा "मत रो चिड़िया गौरैया तू! / क्यों रोती है ? क्या दुःख तुझको?/ बोली तब चिड़िया गौरैया : / क्या बोलूं? ओ पर्वतबाला ! /रहने दे एकाकी मुझको, हे गिरि–बाला! / दुःख के कारण रोती हूँ मैं। / खो बैठी हूँ भारत मैं अपने प्रियतम को/ कोई नहीं है, जिसके संग भारत जाऊं मैं।"[3] मैंने मारियाना के सहयोग से "जंतुओं की भाषा" और "मेढकी" नामक दो क्रोएशियन लोक कहानियों का अनुवाद हिंदी में किया। प्रस्तुत काव्य पंक्तियों और इन दो कहानियों के अनुवाद से लगा कि लोक साहित्य चाहे किसी भी देश का हो उसमें कथ्य की सरलता, मार्मिकता एवं भावोद्गार का गुण सबमें प्रमुख होता है।

ध्यातव्य है, कि किसी भी भाषा और साहित्य में मूलतः चार प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है। तत्सम, तद्भव, विदेशी और देशज। संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, भाषा के जो मूल शब्द भारोपीय परिवार की भाषाओं में घुलमिल गए हैं। वे तत्सम के रूप में आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। पहले साहित्यिक मंचों पर हम अधिकांशतः इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते थे। यही शब्द थोड़े बदलकर तद्भव बन जाते हैं, जिनका प्रयोग साहित्य और आमजीवन में होता है। अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेज़ी के महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसकी शब्दावली विश्व की लगभग सभी भाषाओं में प्रयुक्त होती है। हिंदी के सामने तो संकट पैदा हो गया है, क्योंकि वह हिंग्लिश का रूप धारण करती जा रही है। क्रोएशियन भाषा में भी atmosfera, auto, banka,direktor, engleska, Europa, Festival, filmu, hotel, ideja, institucija, kilometar, kultura posta, poljski, republika, student,turist आदि अंग्रेज़ी से मिलते–जुलते शब्द भरे पड़े हैं। यूरोप की अधिकांश भाषाओं के मूल में लैटिन होने के कारण बहुत सारे शब्दों का प्रयोग सामान्य रूप से सभी में होता है। मीडिया एवं टेक्नोलॉजी की शब्दावली टी. वी., कम्प्यूटर, माऊस, हार्डडिस्क, वेबसाइट, इंटरनेट, सिम, रिचार्ज, हॅलो, स्मार्ट फ़ोन, रीचार्ज आदि शब्दों का प्रयोग विश्व की लगभग सभी भाषाओं में प्रयुक्त हो रहा है। रचनाकार साहित्य की उर्वरता के लिए देशज शब्दों का प्रयोग करता है। जोकि हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। जिनसे साहित्य और संस्कृति को ऊर्जा मिलती है। जैसे कि आज मनुष्य आधुनिकता से ऊबकर परंपरा की ओर

मुड़ रहा है।

जहाँ तक हिंदी और क्रोएशियन भाषा का सवाल है तो ये दोनों एक ही भारोपीय भाषा परिवार से जुड़ी हैं। परिवार शब्द की भावात्मक संवेदना से हिंदी, क्रोएशियन भाषा, साहित्य और संस्कृति का जुड़ाव स्वयं सिद्ध हो जाता है। मैं दोनों की निकटता को कतिपय उदाहरणों के माध्यम से व्यक्त करना समीचीन समझता हूँ। संस्कृत–भ्राता, क्रोएशियन–ब्रात, हिंदी–भाई, संस्कृत–तात, क्रोएशियन–ताता, हिंदी–पिता, गृह्णाति–ग्रबीती, कासते–कॉलजति, गिरति–जदेरति, जानति–जनाति, ललति–ललिजति, मातृ–माती, द्वय–द्वा, तृतीय–त्रि, षष्टम–सेस्त, सप्तम–दम, दशम–देसेद, दा–दाती, अथ–अको, अस्ति–जेस्त, तव–ट्वॉज, प्रजा–पोरोद, माँ–मामा, पीना–पीती, लाश–लेस, दादा–देदा, तू–ति, बरामदा–वेरांडा, कमीज़–कोसुलज, पीना–पीति, तमस–तामा, पूर्व–परवी, पूर्ण–पूण, गिरि–गोरा, मगर–मकर, मृत–मृतव, साबुन–सपुन आदि। यहाँ कतिपय क्रोएशियन और हिंदी के मिलते–जुलते वाक्य द्रष्टव्य हैं। मोजा मामाजे मलादा (Moja Mamaje Mlada) = मेरी माँ युवती है। देदा जे ना वेरांदी (Deda je na verandi) = दादा जी बरामदे में हैं। आरमार जे पाओ (Ormar je pao) = आलमारी गिर पड़ी। मोज परिजटलज स्पाव (Moj prijatolj spava = मेरा प्रिय सोना है। इमस ग्रानजे (Imas Gnanje) तुम्हारा ज्ञान है।

अब मैं भाषाई स्तर की कतिपय समानताओं के पश्चात् दोनों भाषाओं की कालगत साहित्यिक प्रवृत्तियों की चर्चा करना उचित समझता हूँ। साहित्य की उत्पत्ति जीवन और जगत से होती है। जहाँ जीवन होगा, वहाँ साहित्य होगा। ये दोनों एक–दूसरे को प्रभावित करते और होते हैं। मनुष्य जीवन की परिस्थितियाँ और समय उसके कारक तत्व होते हैं। विश्व पटल पर इनमें विभिन्नता हो सकती है, लेकिन संवेदना, चेतना, संस्कृति, ऐतिहासिक अनुभव आदि मानवीय पक्ष को विशेष भू–भाग तक सीमित नहीं किया जा सकता। हिंदी के स्वनामधन्य समालोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है "जिस प्रकार दूसरी जाति या मतवाले के हृदय हैं, उसी प्रकार हमारे भी, जिस प्रकार दूसरे के हृदय में प्रेम की तरंगें उठती हैं, उसी प्रकार हमारे हृदय में भी, प्रिय का वियोग जैसे दूसरों को व्याकुल करता है, वैसे हमें भी, माता का जो हृदय दूसरे के यहाँ है, वही हमारे यहाँ भी, जिन बातों से दूसरों को सुख–दुःख होता है, उन्हीं बातों से हमें भी।"[4]

साहित्य में बोली–भाषा में कविता की मौखिक परंपरा हिंदी और ह्वाती दोनों भाषाओं में मिलती हैं। 11–12 वीं सदी के आस–पास जहाँ मूल ह्वाती "चाकावी" बोली में लिखी गई रचनाओं में धार्मिक दृष्टिकोण के अलावा जन–चेतना एवं तथ्यपरकता की अनुभूति और अभिव्यक्ति की प्रखरता, कोमलता और संगीतात्मकता मिलती है, वहाँ हिंदी साहित्य में अपभ्रंश भाषा में लिखे गए काव्यों में अतिशयोक्ति एवं गेयता के गुण अधिक मिलते हैं। जहाँ हिंदी का मध्यकालीन साहित्य धर्मोन्मुख एवं श्रृंगारिकोन्मुख था, वहीं क्रोएशियन धर्मयथार्थोन्मुख। हनीबल लूत्सीच (1485–1553) 'सर्वप्रथम जब देखा तुमको' शीर्षक कविता में नारी के बाह्य, बौद्धिक एवं उसमें अंतर्निहित नैसर्गिक सौंदर्य का वर्णन करते हैं। "सर्वप्रथम जब देखे स्वर्णिम केश तुम्हारे/ और प्रियतमा! नयन तुम्हारे वे मनमोहक / शोभा अमित तुम्हारे उस मुखड़े की, जिसमें / प्रकृति दृष्टिगोचर है सुंदरतम रूपों में।"[5] इसी प्रकार ईवान बूनिच वुचिच (1591–1658) अपनी 'लावण्यमयी एलेना' कविता में प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से एलेना के सौंदर्य को चित्रित करते हैं। विश्व के सभी भाषा साहित्य में प्रकृति, प्रेम, नारी, धर्म, ईश्वर, मूल्य, राष्ट्र, मानव आदि विषयों पर रचनाएँ मिलती हैं।

15–16वीं शताब्दी का भक्ति आंदोलन मानवता, उदारता, नैतिकता, सहबंधुत्व आदि विचारों और भावों से सराबोर था। "कबीर कूता राम का मूतिया मेरा नाँव, गले राम की जेवड़ी जित खींचौ तित जाँव चरन कमल बंदौ हरि राई", "रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेहिं जो जाननि

हारा", मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई", "मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वालन।" आदि पंक्तियाँ साक्षी हैं। मध्ययुगीन ह्ववाती काव्य में भक्तिभाव की प्रखरता हिंदी की भांति नहीं थी। यहाँ भक्ति आंदोलन के रूप में नहीं था। जबकि परिवेशगत परिस्थितियाँ लगभग समान थीं। क्रोएशियन काव्य में वस्तु की विविधता, भाषा की सरलता एवं सहजता, रूपकों की मौलिकता, जातिवर्ग का प्रदर्शन आदि भक्ति की मुख्य विशेषताएँ थीं। सिल्विए स्त्राहीमीर क्रांचेविच "एलो! एलो! लमा अजावतनि" शीर्षक कविता कतिपय पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

गोलगथ पर बूढ़ा वृक्ष टूट गया, चुराई गईं उसकी कीलें–पहले तो यही घटा!

मानवजाति, भाईचारे और स्वतंत्रता के नाम पर, निरीश्वरता से आरंभ किया नृत्य रक्तमय... मंडली चीख रही थी मदिरा के वीभत्स उन्माद में हत्या करते हैं हम, ईश्वर, सब तेरे लिए–बचा ले!

कवि सिल्विए की "उपसंहार" कविता की "श्रीमंत सभी सोने से सजे, पदक धारण किए /नन्हें शिशु को मोड़ पर घृणा से देखते निकल जाते/ उच्च महिलाएँ कोमल, नन्हें नथुनों को दबा लेती / सुगंधित रूमाल से जो कहीं उस शिशु को देख लेतीं /दुर्गंध उन्हें आती शिशु से तेल, कोलतार, रंग की लकड़ी की" [7] इन पंक्तियों से प्रगतिशील त्रयी के श्रेष्ठ कवि नागार्जुन की "दूध–सा धुला सादा लिबास है तुम्हारा / निकले हो शायद चौरंगी की हवा खाने / बैठना था पंखे के नीचे, अगले डब्बे में / ये तो बस इसी तरह/लगाएँगे ठहाके, सुरती फाँकेंगे/ भरे मुँह बात करेंगे अपने देस–कोस की / सच–सच बतलाओं / अखरती तो नहीं इनकी सोहबत? / जी तो नहीं कुढ़ता है? / घिन तो नहीं आती है?[8] पंक्तियाँ जीवंत हो उठती हैं।

इसी दौर में ह्ववाती साहित्य ईश्वर से मानव की ओर पलायन कर रहा था। जबकि हिंदी साहित्य को यहाँ तक पहुंचते–पहुँचते चार सौ वर्ष लग गए। 1850 के बाद हिंदी साहित्य परलोक से लोक की तरफ़ उन्मुख हुआ। इस दौर में हिंदी की भांति क्रोएशियन भाषा में भी कालिदास कृत "शकुंतला" "वेतालपंचविंशतिका" रामायण और महाभारत की कुछ कहानियों के अनुवाद संस्कृत से क्रोएशियन भाषा में हुए। कालांतर में पंचतंत्र की कहानियों, गीतांजलि, कबीर, महादेवी वर्मा, महात्मा गांधी, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय आदि की कतिपय रचनाओं के अनुवाद हुए और आज भी यह क्रम जारी है। क्रोएशियन एवं हिंदी साहित्य को परस्पर एक–दूसरी भाषाओं में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण कार्य श्यौराजसिंह जैन ने किया।

हिंदी साहित्य की छायावादी काव्य–प्रवृत्तियों से मिलती–जुलती रचनाएँ क्रोएशियन कविताओं में भी मिलती हैं।

"रँग गई पग–पग धन्य धरा / हुई जग जगमग मनोहरा / वर्ण गन्ध धर, मधु मरन्द भर / तरु–उर की अरुणिमा तरुणतर / खुली रूप–कलियों में पर भर/ स्तर स्तर सुपरिसरा /गूंज उठा उठा पिक–पावन पंचम / खग–कुल–कलरव मृदुल मनोरम /सुख के भय काँपती / प्रणय–क्लम, वन श्री चारुतरा।"[9] सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रस्तुत पंक्तियों की भावभूमि की भांति कवि आंतुन गुस्ताव मातोष की "संबंध" कविता की काव्य पंक्तियां भी हैं। "मंद वसंत का यह ओसमयी पुत्र/सभी पुष्पों में हमें प्रियतम है / वर्ण, हिमगंध स्वच्छ, दुग्ध भी है / अबोध, शुभ्र निर्मल शिशुवत अश्रु और कुमुद / तेरे प्राण का सौरभ/ मेरे प्रणय, मनाता नन्हा कुमुदिन, प्रसून रूपमय।"[10]

व्लादीमीर नाजोर ने तो विश्वमित्र, ब्रह्मा, बुद्ध, निर्वाण, माया आदि का अपनी कविताओं में सार्थक प्रयोग किया है। आपने "बुद्ध" शीर्षक कविता में उनके विचारों को इंगित किया है। "और बुद्ध की आत्मा–स्त्री के हाथों में / माया के पुनः आवरण में / च्युत हुई, वासना फेंकी / नव पीड़ा के दारुण / तम में उठी और उत्थत्त हुई।"[11]

पश्चिम अपनी वस्तुवादी एवं यथार्थ परक सोच के लिए जाना जाता है। पश्चिम से पूर्व में वैज्ञानिक सोच,

यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद आदि देर से आयातित हुआ। यूरोप के एक लेखक ने लिखा है "यूरोप नियम है, एशिया मन की तरंग है। यूरोप कर्तव्य है, एशिया मनोदशा है। यूरोप तथ्यात्मक और वस्तुपरक है, एशिया वैयक्तिक और आत्मनिष्ठ है। यूरोप आदमी है, एशिया बच्चा और बूढ़ा आदमी है।" लेखक के विचार को कुछ हद तक सही माना जा सकता है। वस्तुतः किसी भी भू–भाग की जातियाँ जिस प्रकार के विचारों में विश्वास करती हैं, उसी प्रकार उनके कर्म भी होने लगते हैं। फलस्वरूप कलाओं का जन्म भी उसी के अनुरूप होता है। इस दृष्टि से वैदिक युग प्रवृत्तिवादी था। आर्य दुनिया को त्याग की नहीं अपितु भोग की वस्तु मानते थे। प्रसादजी ने कामायनी में लिखा है "कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ चेतन का आनंद।" कालांतर में बौद्ध साहित्य में पलायन और भक्ति साहित्य विशेष परिस्थितिवश ईश्वरोन्मुख हुआ।

हृवाती पुनर्जागरण काव्य का सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र दुब्रोनिक था। जहाँ 15वीं से 17वीं सदी के बीच शीषको मैय्चेतिच, जौरेदृझिच, इवान गुंदूलीच आदि जैसे महत्त्वपूर्ण कवियों ने रचनाएँ लिखी। मार्को मारुलिच ने गलगोली काव्य परंपरा को मानवतावादी तथा पुनर्जागरण की आत्मा से मिलाया। क्रोएशिया में दुब्रोनिक, स्प्लित एवं ज़दर भी पुनर्जागरण का केंद्र था।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने जहाँ हिंदी कविता को छंदों के आवरण से मुक्त किया, वहीं क्रोएशियन कवि ल्यूबा बीजनेर ने क्रांचेविच और मातोष के बाद आधुनिक कविता को आगे बढ़ाते हुए छंदबद्धता का विरोध किया। "श्वास भरो कि कूद जाएँ, एक–दूसरे में सिमट जाएँ हम; उनींदा है रक्त हमारा–जागरण में मुक्ति है"[12] जैसी पंक्तियों से यांको पोलिच–कामोव ने प्रेमकाव्य में जिस झूठी नागरिक नैतिकता, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध 18–20वीं सदी के संधिकाल में किया। उसकी पहल मुक्त रूप से हिंदी कविता में स्वतंत्रता के बाद हुई। क्रोएशियन कवि तिन उयेविच (1891–1955) ने तो संस्कृत सीखी, रवींद्रनाथ ठाकुर, सरोजिनी नायडु के गीतों का अनुवाद और कबीर पर लेख लिखा। अपने पत्रों में "ऊँ" और "गणेश की कृपा" जैसे मंगल शब्दों का प्रयोग किया। हिंदी साहित्य में आधुनिकता और पूंजीवाद से उपजी नगरीय जीवन में जिस थकान, एकाकीपन, क्षोभ, निराशा, संत्रास, घुटन की अनुभूति 20वीं सदी के उत्तरार्ध में की गई, उसकी अनुभूति ईवो कोजारचानिन ने 20वीं सदी के चौथे दशक में की। "स्त्री की गोद में डाल देता हूँ मज़ाकिया सिर बिखरे बालों का / अपने पोरों तक खींच लेता हूँ उसकी हथेलियों की प्रियता/ लगता है मुझे ओसभरी घास में आज कामनाएँ शांत हैं।"[13] हिंदी कविता में प्रगतिवाद के दौरान मार्क्सवादी विचारधारा ने आंदोलन का रूप लिया था, जिसका प्रभाव वामपंथियों में आज भी देखा जा सकता है। क्रोएशिया में भी इस विचारधारा का ज़बरदस्त प्रभाव है। यूरे काष्तेलान लिखते हैं "सुनता हूँ शब्द / ज्वर में / – कामरेड... /–कामरेड... / हाथ में ठंडा हाथ थामता हूँ / चलता जाता हूँ / मूक / सैन्य – टुकड़ी में।"[14]

हिंदी साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों के चित्रण में यथार्थवाद एवं अतियथार्थवाद का प्रयोग हुआ है। 20–21वीं सदी के संधिकाल के दौर में चन्द्रकांत देवताले, कुमार अम्बुज, बोधिसत्व, एकांत श्रीवास्तव, निलय उपाध्याय, नीलेश रघुवंशी आदि ने पारिवारिक संवेदनाओं पर कविताएँ लिखीं। इसके साथ ही हिंदी कथा–साहित्य में इसे व्यापक रूप से देखा जा सकता है। क्रोएशियन कविता में हम इसे क्रमशः– जवोनीमीर गोलोब और योसिप पूपाचिच की कविताओं में देख सकते हैं। "घर तो महज नींव है – खाका तेरी मृत्यु का, मेरे भाई! / चला गया घर। चला गया घर। चला गया घर तेरा।"[15] क्रोएशियन साहित्य की भांति हिंदी में भी भूमंडलीकरण, मीडिया विस्फोट, तकनीकी विकास, पूंजीवाद आदि से उपजी मानवीय संवेदना और सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना के स्वरूप को देखा जा सकता है।

संस्कृति आदमी के सामाजिक जीवन का प्राण तत्व

है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की कहानी बहुत पुरानी है। जंगली जीवन से सामाजिक जीवन की ओर बढ़ना सभ्यता है। संस्कृति का संबंध विचारों की दुनिया से है। धर्म, दर्शन, पूजापाठ, राष्ट्र, सामाजिक संगठन आदि उसकी मंज़िलें हैं। संस्कृति स्थान, परिवेश और परिस्थिति पर भी निर्भर होती है। भारत और क्रोएशिया में रीति–रिवाज़, पूजा –पाठ, खान–पान, वेश–भूषा, रहन–सहन आदि की दृष्टि से भिन्नता हो सकती है, लेकिन प्रेम, करुणा, दया, माया, ममता, उदारता, सहयोग, सहबंधुत्व, सहकारिता, राष्ट्रीयता आदि के धरातल पर हम अभिन्न हैं। यहीं पर संस्कृति आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों के निकटस्थ दिखती है।

विगत कई महीनों से मैं क्रोएशियन संस्कृति को जानने और समझने का प्रयास कर रहा हूँ। भारतीय समाज के कतिपय रीति–रिवाज़ और वैचारिक सोच यहाँ के जीवन में भी व्याप्त थी। कतिपय मायनों में आज भी है। मैंने दींको शिमूनोविच (1873 –1933) की 'इंद्रधनुष' कहानी पढ़ी। प्रस्तुत कहानी में चार्दक कस्बे के सरदार और उसकी पत्नी की बेटी स्रीना के प्रति भेदभाव की मानसिकता इन शब्दों में व्यक्त होती है, "सरदार व सरदारनी सोचते थे कि कोई भी गीत मधुरता से गाना उनकी बेटी को शोभा नहीं देता, क्योंकि वह एक स्त्री है, पुरुष नहीं। इसीलिए उसे प्यानो खरीदकर भी नहीं दिया "[16] इसके आगे वे कहते हैं" लड़के जितना चाहें, खा सकते हैं, क्योंकि उन्हें बड़ा और शक्तिमान होने की ज़रूरत है। लेकिन, तुझे तो पतला और छरहरा बनना है। चेहरे को भी नीचा रख सकती है।"[17] फिर स्रीना ने एक विधवा से सुना "बड़े दुःख की बात है कि आपको कोई बेटा नहीं है।"[18] मार्को की अपनी पत्नी के प्रति अवसरवादिता और उसका यह कथन कि "बच्ची क्या खाक सुन्दर है। अरे, लड़कियों से तो ईश्वर भी खुश नहीं रहता।" [19] इसके अलावा स्रीना ने कहानी की पात्रा विधवा से सुना कि छोटी उम्र की लड़की इंद्रधनुष के नीचे दौड़ने से लड़का बन सकती हैं। अंततः लड़की होने की हीन भावना से छुटकारा पाने के लिए लड़का बनने की उम्मीद में वह इंद्रधनुष के नीचे दौड़ते हुए अपना प्राण दे देती है। भारत में बेटी के संदर्भ में आज भी कुछ अमानवीय सोच के लोग हैं। जिनके कारण 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं' का नारा बुलंद करना पड़ा।

जैसा कि मैंने पहले 'जंतुओं की भाषा' और 'मेढकी' लोक कहानी का उल्लेख किया है। इसके साथ ही मैंने मारियाना के साथ 'अमेरिकी ड्रीम' कहानी का भी हिंदी में अनुवाद किया। प्राकृतिक उपादानों की भिन्नता के साथ कथ्य और शिल्प की दृष्टि से हिंदी और क्रोएशियन साहित्य में बहुत–सी समानताएँ मिलती हैं। क्रोएशियाई लोक कहानियों की भांति भारतीय लोक कथाएँ तोता–मैना, खरगोश, चूहा, सियार आदि जीव–जंतुओं की कहानियों से भरी पड़ी हैं। 'अमेरिकी ड्रीम' कहानी में क्रोएशिया के जॉन का अमेरिका में बसने का जो सपना है, वह आज भी भारतीय जनमानस में दिवा स्वप्न की भांति मौजूद है।

मैंने क्रोएशियन साहित्य के अतिरिक्त दो मकदूनी कहानियों का भी साम्यता की दृष्टि से अवलोकन किया है। 1950 के पूर्व जौर्जी अबाजिएब की कहानी 'तमाखू की डिबिया' में इस्तांबुल के अंतर्गत जिस साम्प्रदायिक दंगे में खैरदीन बेग की हत्या की जाती है; उसकी आग इक्कीसवीं शताब्दी में भी नहीं बुझी है। खैरदीन बेग का बेटा सुलेमान बेग आधुनिक एवं उसका मित्र गोतसे रूढ़िवादी सोच का है। बचपन में बिछुड़ने के बाद दोनों की मुलाकात यात्रा करते समय गाड़ी में होती है। जहाँ एक दूसरे के संवाद से दोनों के विचारों का पता चलता है। "आपको लगता है जो बात पेरिस में है, वह इस्तांबूल में नहीं। कमबख्त यूरोप कैसे जवान दिमागों को खराब कर रहा है।"

ब्लादो मालैस्की की दो कहानियों में पहली कहानी 1954 में लिखी "पहली रात" में कामरेड सान्द्रे और स्तोयांका जर्मनी के आतंक के बीच बिना किसी तड़क–भड़क और गाजे– बाजे के बीच शादी करते हैं। इस बात पर अफ़सोस व्यक्त करते हुए सान्द्रे शादी की पहली रात में कहता है–

"कोई बात नहीं, स्तोयांका, उदास मत हो.... हमारा भी वक्त आएगा।" दोनों एक–दूसरे का प्रेम मनुहार करते हैं। सान्द्रे उसके सौंदर्य पर मुग्ध होता है कि इसी बीच क्रूमे की घबराई हुई आवाज़ आती है – "जर्मन आ रहे हैं, सान्द्रे, छिप जाओ कहीं!" [22] सान्द्रे अपनी पत्नी को छोड़कर भागता है। कुछ दूर जाने के बाद उसे पता चलता है कि वे उसके ही आदमी हैं। फिर वह उन्हें घर ले आता है, क्योंकि वे बहुत भूखे हैं। स्तोयांका कामरेडों को खाना खिलाती है और साथ ही विदा करते समय उन्हें अपने हाथ से बुने हुए मोजे उपहार स्वरूप भेंट करती है। सान्द्रे उन्हें रात में ग्रीस के रास्ते बाहर निकलने के लिए रास्ता दिखाने के लिए स्तोयांका से पुनः जल्दी वापस आने का वादा करके चला जाता है।

1954 में लिखी दूसरी कहानी "खिला हुआ दिन" सान्द्रे के जीवन का दूसरा भाग है। जहाँ वह मेसेडोनिया की राजधानी स्कोप्ये में शादी के बाद दूसरी पहली रात आर्टिस्ट नादा के साथ बिताता है। सान्द्रे यहाँ आने के बाद स्तोयांका के साथ बीते समय एवं घटनाओं को नकार देता है। सान्द्रे कहता है – "सीखना ज़रूरी है : लोग कहते हैं कि अगर नहीं सीखेंगे, तो समय कुचल देगा हमको। समय लोगों को पहले ही कुचल चुका है.... तुम रो रही हो? रो लो! और मैं.... मैं, मैं नहीं रो सकता। तब भी नहीं रोया था जब पाब्ले ने बताया था कि तर्पे मशीनगन गले में लगाए बर्फ़ पर गिर गया था। तब भी नहीं रोया था, जब चटाई पर तुम्हारे साथ नहीं सो पाया था। तुम तब भी रोई थीं. ...।" यह सब ख्यालों में बड़बड़ाता हुआ सान्द्रे – "देखो, स्तोयांको.... एक बात कहूँ। इन सब बातों को छोड़ो। खास बात ये है कि तुम तो तुम ही रहीं, पर मैं, मैं नहीं रहा।" [24] सामान्यतः अन्याय, अत्याचार और जुल्मों का शिकार नारी ही रही है। इसे हम किसी एक देश की सीमा में बांधकर नहीं देख सकते।

हिंदी साहित्य में ऐसी कई कहानियाँ हैं। जिसमें स्वतंत्रता सेनानी सुहाग रात को छोड़कर देश की रक्षा के लिए निकल पड़ता है। इसके अतिरिक्त अन्य कहानियों में नशे में धुत्त पुरुष पत्नी को छोड़कर प्रेमिका या वेश्या के पास चला जाता है। पत्नी धीरे–धीरे अपने त्याग और समर्पण से उसे सही राह पर लाती है।

संस्कृति का संबंध मूलतः मानवजीवन के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश, परंपरा और नैतिक मूल्यों से अधिक है। यह विभिन्न भूभागों से जुड़े हुए मानव समुदायों की भाषा, आचार–विचार, आहार–व्यवहार, धार्मिक संस्कार, नैतिक मूल्यों, कला आदि के माध्यम से व्यक्त होती है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन लगभग 5000 हजार वर्ष पुरानी है। इसकी खास बात यह है कि इसमें कई संस्कृतियाँ आईं और घुलमिल के एक हो गई। मैंने भारतीय संस्कृति की झलक क्रोएशिया की लोक परंपराओं, रूढ़ियों और संयुक्त परिवार की परंपराओं में देखी। मुझे जाग्रेब के सिटी सेंटर में 20 से 24 जुलाई 2016 को यहाँ की सरकार द्वारा आयोजित 50वें अंतरराष्ट्रीय लोकनृत्य को देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसमें यूरोप के विभिन्न देशों के साथ मुख्य रूप से क्रोएशिया के विभिन्न भूभागों से कई लोकनृत्य मंडल आए थे। स्त्रियों ने लहंगा और पुरुषों ने मिरजई जैसी वेशभूषा पहन रखी थी। स्त्री–पुरुषों के सिर ढके हुए और छोटी–छोटी लड़कियों ने उत्तर भारत की लड़कियों की तरह फीते के फूलों के साथ चोटी बांध रखी थी। लोकगीतों की भाषा उनकी अपनी–अपनी थी। जब मैंने लोकगीतों के विषय में जानकारी ली, तब पता चला कि ये गीत जन्म, विवाह और खेत– खलिहानों के हैं। इनके अंदर बीच–बीच में मनोरंजन भी किया जा रहा था। विवाह गीत में मैंने दूल्हे और दुल्हन को अलग वेश–भूषा में कुछ रस्में निभाते एवं कतिपय मिट्टी एवं अन्य धातुओं के बर्तनों तथा शहनाई, बांसुरी, ड्रम वाद्य–यंत्रों को देखकर उत्तर भारत की शादी की याद तरोताज़ा हो उठी।

भारतीय जनमानस में व्याप्त लोक परंपराएँ और रुढ़ियाँ क्रोएशिया के समाज में भी व्याप्त हैं। जब मैंने धीरे–धीरे यहाँ की जीवन–शैली और सामाजिक

संस्कृति को जानने–समझने का प्रयास किया तब देखा कि कई स्तरों पर कुछ समानताएँ देखने को मिलीं। यहाँ के समाज में सामान्य रूप से छींक आने पर निजड्रावलजे (niazdravlje) बोलकर लोग स्वस्थ होने की मंगल कामना करते हैं। काली बिल्ली का रास्ता काटने पर तीन बार थू.... करके दोष निवारण किया जाता है। दैनिक जीवन में किसी शुभ या अन्य कार्य को करने या जाने के पहले लकड़ी से बनी किसी वस्तु को तीन बार ठोंकते हैं, ताकि कार्य में कोई विघ्न न पैदा हो। शादी के दिन के पहले दूल्हा–दुल्हन को विवाह की पोशाक में नहीं देखते। इसे अशुभ माना जाता है। किसी शुभ कार्य में कांच का टूटना अशुभ माना जाता है। ऐसी अन्य कई रूढ़ियाँ हैं, जो क्रोएशियाई समाज में शताब्दियों पूर्व से चली आ रही हैं। भारत में भी ऐसी रूढ़ियों–परंपराओं का पालन लोक एवं बुद्धिजीवी वर्ग में भी हो रहा है।

भारत भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, रीति–रिवाज़, आचार–विचार, खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा, कलाओं आदि से युक्त विविधताओं का देश है। क्रोएशिया में इतनी विविधताएँ नहीं हैं। फिर भी यह राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एकात्मकता एवं मानवीय मूल्यों का धनी देश है। यहाँ की ज़िंदगी सुबह दोबरदान से शुरू होकर शाम को दोविजेन्या से खत्म होती है। सहयोग की भावना भी प्रबल है। संयुक्त परिवार एवं सामाजिकता की परंपरा अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में ठोस है। संसाधनों की सुविधा होने के कारण मानव शक्ति की जगह मशीनी शक्ति का प्रयोग अधिक होता है। यहाँ गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। खान–पान की विविधता यहाँ कम है। भौगोलिक एवं अन्य कारणों से जिन चीजों का भारत में निषेध है, वह यहाँ की संस्कृति का अभिन्न अंग है। परिवार और शैक्षणिक संस्थाओं में आपसी रिश्तों का तानाबाना भारत से कुछ भिन्न है। अब विश्वग्राम की संकल्पना में संस्कृतियों का आयात–निर्यात तेज़ी से हो रहा है। भारत की विभिन्नता में एकता का सूत्र अब वैश्विक स्तर पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। इक्कीसवीं सदी में विश्वग्राम की संकल्पना से विभिन्न देशों की भाषा, साहित्य और संस्कृति को करीब आने का सुअवसर प्राप्त होगा।

संदर्भ–सूची :

1. प्रेमचंद, प्रतिनिधि कहानियाँ–संकलन संपादन, भीष्म साहनी–भूमिका से
2. समकालीन यूगोस्लाव कविता–1, संचयन एवं अनुवाद–श्यौराजसिंह जैन–भूमिका
3. क्रोएशियन साहित्य, सम्पादिका–नाताषा नेदेल्यकोविच पृष्ठ –25
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–जायसी ग्रन्थावली पृष्ठ –137
5. क्रोएशियन साहित्य, सम्पादिका–नाताषा नेदेल्यकोविच पृष्ठ–28
6. समकालीन यूगोस्लाव कविता–1, संचयन एवं अनुवाद –श्यौराजसिंह जैन
7. वही–पृष्ठ–03
8. नागार्जुन, प्रतिनिधि कविताएँ–संपादक–नामवर सिंह, पृष्ठ –36–37
9. अंतरजाल से
10. समकालीन यूगोस्लाव कविता–1, संचयन एवं अनुवाद–श्यौराजसिंह जैन पृष्ठ 10–11

= 11,12,13, 14,15, वही– पृष्ठ – 20, 29, 92, 112, 133

16 क्रोएशियन साहित्य, सम्पादिका–नाताषा नेदेल्यकोविच, पृष्ठ–53

= 17,18 ,19 वही–पृष्ठ–54,59, 63

20– समकालीन यूगोस्लाव कहानी–01(मकदूनी कहानियाँ) पृष्ठ–05

= 21,22 वही–पृष्ठ–17,18

ज़ाग्रेब विश्वविद्यालय, क्रोएशिया
rnmishra@unigoa.ac.in